मधु कांकरिया की कहानियों में आदिवासी जीवन की समस्याएँ

सुषमा तिर्की

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

सारांश- समकालीन साहित्य सृजन परंपरा में मधु कांकरिया ने अपनी दमदार रचनाओं से समकालीन साहित्य में अपनी प्रज्वलित जगह बनाई है। उनकी कहानियाँ नग्न यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती है। मधु कांकरिया कोलकाता के महानगरीय जीवन के ऊब से जब तब जंगलों की ओर मुड़ पड़ती है। जंगल के प्रति आकर्षण उनकी 1992 में हुआ जब वह गुमला और पलामू के भ्रमण पर निकली और वह आश्चर्यचकित हुई कि ऐसे भी जीवन संभव है। उन्होंने आदिवासियों के बीच समय बिताया तमाम तरह की समस्याओं और उनकी जीवन की कटुता को अनुभव किया। किन हालातों में वे अपने जीवन जी रहे हैं इससे अवगत उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से कराया।

बीज शब्दः- आदिवासी, समस्याएँ, जीवन, समाज, संघर्ष।

बेरोजगारी की समस्याः- बेरोजगारी वह परिस्थिति है जिसमें समाज में सदस्यों में पर्याप्त योग्यता, कार्य करने की क्षमता रहने के बावजूद उसे आजीविका के लिए इतने साधन नही मिल पाते हैं कि वह अपनी कार्य कुशलता बनाये रख सके और अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर सके। मधु कांकरिया की कहानियों में भी आदिवासियों के बीच फैली बेरोजगारी की समस्या देखने को मिलती है। उन्हें बेरोजगारी की समस्या के कारण अपना घर छोड़ के परदेश रोजगार की तलाश में जाना पड़ता है। 'दबी-दबी लहरे' कहानी में महिला पात्र मंगला बताती है कि किस प्रकार उनके पति को रोजगार नही मिलने के कारण दिल्ली जाना पड़ता है। जिससे घर गृहस्थी अच्छा चल सके। मंगला बताती है कि गाँव के सभी जवान लड़के कमाने के लिए बाहर चले जाते है। उसके पति के संगी-साथी भी कमाने के लिए परदेश चले गए। यहाँ तो सुबह पाँच बजे से रात तक मेहनत के बाद भी खाने के लाले पड़े रहते है। मंगला बताती हैः-"हमारे आदमी को कभी दिल्ली तो कभी राँची में मजदूरी मिल जाती है, दिन का 110 रूपल्ली मिल जाते है इतना तो दूसरे के खेत में काम करने पर भी नही मिलता है, माइंस में भी मजदूरी के मिलते हैं दिन का सौ रूपल्ली। सो वे दिल्ली में मजदूरी करने चले जाते है। बस करमा और सरहुल पर्व पर घर आते हैं....."।[1] 'भरी दोपहरी के अंधेरे' कहानी में संथाल आदिवासी को रोजगार के लिए डोली उठाना पड़ता है। जैनियों का मक्का मदीना जहाँ एक किलोमीटर के भीतर ही बीस भव्य

मंदिर है। जहाँ संथाल आदिवासी डोली उठाकर तीर्थयात्रियों को मंदिर का दर्शन कराते है। इन पहाड़ियों पर संथाल आदिवासियों को डोली उठाकर ऊँचाई में चढ़ने के दौरान कई तरह की घटनाओं का सामना करना पड़ता है। कभी पैर फिसल जाना, कभी गर्मी के कारण मूर्छित हो जाना इत्यादि। दुर्गम पहाड़ पर 50 से 70 किलो का बोझ लादने का सिर्फ 350 या 375 रूपया मिलता है। कहानी की लेखिका पूछती हैः- **"**भैया कितना मिल जाता है आपको पूरा पहाड़ के दर्शन करवाने का बंधा हुआ रेट है बैनजी। पचास से सत्तर किलो तक हर डोली वाले को 350 रूपया और उसके बाद 375 रूपया।"[2] लेखिका हैरान होती है यह सुनकर कि 50 से 70 किलो का बोझ लादने का सिर्फ 300 रूपया। इस प्रकार मधु कांकरिया के कहानियों में आदिवासी समाज में फैली बेरोजगारी की समस्या देखने को मिलती है।

अंधविश्वासः- आदिवासी समाज में अंधविश्वास व्यापक रूप से फैली हुई है। आदिवासी अशिक्षित, रूढ़िवादी और सीधे होने के कारण किसी भी बात पर तुरंत विश्वास कर लेते है। जिसके कारण उन्हें अनेक जोखिम उठानी पड़ती है। वे झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र और ओझाओं के जाल में फँस जाते है। जिस कारण वे अपनी जान तक गवाँ बैठते हैं। मधु कांकरिया की कहानी "निर्वासिता" में इस समस्या का चित्रण किया गया है। इस कहानी में मुम्बई स्थित वर्ली आदिवासी के घर में रोशनी नहीं होने के कारण घर में साँप घुसने का अंदाजा नहीं हो पाता है। नतीजा सर्पदंश का शिकार हुए आदिवासी ओझा-गुणी के चक्करों में पड़ अपनी जान गवाँ बैठते है। लेखिका कहानी के माध्यम से बताती हैः- "घटना पाताचापानी गाँव की थी जो कि मुम्बई-मंत्रालय से महज 50 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी पर बसा छोटा-सा गाँव था जहाँ वर्ली जाति के आदिवासी रहते थे। एक शाम मूँज की खटिया पर सभी सोये हुए थे कि परिवार के मुखिया के ऊपर झाड़ियों से सरसराता हुआ साँप चढ़ गया। दर्द से बिलबिलाते हुए उसने हाथ को झटका। अँधेरे से उसे कुछ दिखा नहीं। साँप पास में ही लेटी उसकी बेटी पर गिरा। बेटी चीखी। आस-पास के लोग दौड़े हुए आये। खौफ जगाते और हिंसक जानवारों से भरे, रात के सॉय-सॉय करते नीले-नीले अंधेरे में मशाल के सहारे वे जब तक साँप का विष निकालने वाले ओझा-गुणी को लोते दोनों की नीले पड़ चुके थे।**"**[3] कहानी **"**भरी दोपहरिया के अंधेरे**"** में भी आदिवासियों ने बताया था- "जैसे हमारी स्त्रियों के शरीर पर गोदने के निशान जरूरी है वैसे ही पुरूष आदिवासियों के दाहिने हाथ पर सिक्के के तीन निशान ..... यह हमारे पुरूषार्थ की निशानी है .....। दरअसल बचपन में ही रूई के तीन टुकड़ो को तेल में भिंगोंकर कलाई पर रख देते है, फिर उनको जला देते हैं ..... हाँ बहुत तकलीफ होती है, पर जो सहन नहीं कर पाता, हम उसे आदिवासी ही नहीं मानते। मुझे तीन दिन का बुखार रहा था, पर अब रिवाज धीरे-धीरे शेष हो रहा है। अब हम अंधविश्वास से दूर हट रहे हैं। हमने अपने बच्चों के हाथों पर सिक्के नहीं

बनाए।"[4] इस प्रकार मधु कांकरिया के कहानी में आदिवासियों में फैली तंत्र-मंत्र ओझा-गुणी जैसे अंधविश्वासों पर विश्वास दिखाई देती है।

मद्यपान की समस्याः- आदिवासियों में मद्यपान की समस्या पुश्तैनी है। कहा जाता है कि यह इनकी सामाजिक व्यवस्था और रीति-रिवाज में रचा बसा है। इनकी लोककथाओं और लोकगीतों में भी मद्यपान का बखान देखने को मिलता है। यह आदिवासी समाज की एक गंभीर समस्या है। मधु कांकरियाँ की कहानियों में भी मद्यपान की समस्या देखने को मिलती है। मधु कांकरियाँ की कहानी "दबी-दबी लहरे" की पात्र मंगला बताती है कि किस प्रकार थोड़ी परेशानी में भी उसका पति देशी दारू पी लेता है। लेखिका मंगला से कहती है कि आज रात तुम मेरे साथ रूक जाओ। बस एक रात की ही तो बात है मैं तुम्हें कष्ट नहीं दूंगी। सर नीचा कर उसने बताया, "दीदी ये दो रात मेरी साल-भर की कमाई है, क्या बताये आपको हमारा आदमी आज आ रहा है, पूरे नौ महीनो बाद दिल्ली से ..... मैं नही जाऊँगी तो बारह-बारह घंटे की लम्बी-लम्बी रात वह अकेले काट नही पायेगा और हड़िया (देशी दारू) पी-पी टुन्न पड़ा रहेगा।"[5] इस प्रकार मधु कांकरिया मद्यपान की समस्या को अपनी कहानी में चित्रित किया है।

गरीबीः- ज्यादातर आदिवासी समुदाय का निवास स्थान दूर जंगलों और पहाड़ी स्थानों में होता है। जिस कारण पर्याप्त संसाधन नही पहुँच पाते है। सरकार द्वारा विकास के नाम पर की जाने वाली अनके प्रयासो के बावजूद आदिवासी समाज आज भी गरीबी से जूझ रही है। मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों में आदिवासियों की गरीबी को उजागर किया है। उनकी कहानी "दबी-दबी लहरे" में लेखिका द्वारा कहानी की पात्र मंगला से पूछने पर कि क्या तुम सुबह में चाय नहीं पीते? मंगला बताती हैः- "चाय? उदास हँसी बिखेरते हुए कहा उसने कि कभी-कभी मेले-ठेले में साल-दो साल में चाय नसीब हो जाती है। गेहूँ भी कहाँ खा पाते है, बड़ा आदमी लोगन का खाना है वह। अब मेरा आदमी दिल्ली में रोज गेहूँ का रोटी खाता है, बाबू लोग की तरह पेंट पहनता है और चाय पीता है। हमें पैसे भेजता है, इसलिए अब हमारे यहाँ भी काली चाय बनती है। कभी-कभी गेहूँ की रोटी भी बनती है।"[6] इसी कहानी में लेखिका कहानी की पात्र मंगला से पूछती है बिजली का पंखा तुमने देखा है? मंगला बताती हैः- "मैंने यहाँ खुशहाल भारती में देखा है। मेरा आदमी कहता है शहर चल तुझे भी पंखे और बत्ती में सुलाऊँगा, मैं पूछती हूँ कब ले चलेगा तो चुप हो जाता है। यहाँ तो हम डिबरी में रात गुजारते है उसके लिए भी किरोसिन तेल का टोटा पड़ा रहता है, जैसे तेल नहीं घी हो।"[7] इस प्रकार कहानी "भरी दोपहरी के अंधेरे" कहानी में भी लेखिका ने इनकी गरीबी को चित्रित किया हैः- जब वह गिरिडीह जिले में जैनियों का मक्का-मदीना का भ्रमण करने जाती है। तब वह तीन किशोरियों को देखती है। किशोरियों को देखकर

लेखिका सोचती हैः- **"**ये कहाँ से आ टपकी? मैं भीतर से बाहर लौटी। नहीं**,** ये बाहर की नहीं थी। ये यहीं की स्थानीय बाशिंदा थी। पहाड़ी हिरनियों-सी इनकी धमाचौकड़ी, झूमा-झटकी, मैले कपड़े, पाँव में सस्ते प्लास्टिक की चप्पलें एवं बिखरे बाल**....."**[8] इस तरह मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से आदिवासियों के बीच फैली गरीबी का चित्रण किया है।

आदिवासी मजदूरों का शोषणः-आदिवासी समाजो में बाहरी लोगों के प्रवेश से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई है। आदिवासी समाज के लोग गरीबी अशिक्षा आदि समस्याओं के कारण उनको जो भी काम मिलता है वह काम करके अपना जीवन-यापन करने की कोशिश करते है। कई प्रकार के बाहरी समूहों जैसे-व्यापारी, ठेकेदार, महाजन आदि आदिवासियों की अशिक्षा, पिछड़ेपन और उनके भोलेपन का फायदा उठाते है। मधु कांकरिया ने भी अपनी कहानी में आदिवासी की इस समस्या को उजागर किया है। कहानी **"**दबी-दबी लहरे**"** की पात्र मंगला बताती है कि कैसे उसकी बहन बॉक्साइड खदान में काम करने के दौरान शोषण का शिकार होती है। वह बताती हैः- "मेरी बहन मैडम। देर रात तक काम करना पड़ता है**,** क्या बताये मैडम कई बार वहाँ औरतों के साथ कुकर्म भी हो जाता है। खुद मेरी बहन पेट से हो गयी थी हरामी था कॉन्ट्रेक्टर तिवारी, साले को बाघ खा जाये**,** भेड़िया उठा के ले जाये। जंगल कुमार ने बहुत चेष्टा करी उसको अंदर करवाने की **.....**नियम बनवाने की कि औरतन को काम न करना पड़े**,** पर हम काम नहीं करेंगे तो खायेंगे क्या?**"**[9] इस प्रकार मधु कांकरिया ने आदिवासी मजदूरों का शोषण को चित्रित किया है।

पहाड़ों और जंगलों में निवास स्थानः- ज्यादातर आदिवासी दुर्गम स्थानों पर निवास करते है। सुदूर इलाको में रहने के कारण ये यातायात व संचार के साधनों से बहुत दूर रहने के कारण इन्हें स्वयं अपने जीवन यापन के साधन जुटाने पड़ते हैं। हर काम के लिए इन्हें कठिनाईयाँ उठानी पड़ती है। मधु कांकरिया ने अपनी कहानी के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार इन्हें जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहने के कारण तमाम तरह की समस्या उठानी पड़ती है। कहानी "दबी-दबी लहरे" में लेखिका कहानी की पात्र मंगला से पूछती है कितनी जमात पढ़ा है तेरा पतिः- **"**नाक फुलाते हुए कहने लगी कि डेढ़-डेढ़ सौ मीटर की दो-दो नदियाँ पार कर लोहरदगा की सरकारी स्कूल में जाता था रघुवर पढ़ने को।**"** वह कहती है कि पहाड़ी जिन्गी की कठोरता आप मैदान वाले नही समझेंगे।**"**[10] आदिवासी समुदाय का निवास स्थान जंगलों और पहाड़ो में होने के कारण कई बार इन्हें जंगली जानवरों का भी डर रहता है। जंगलों से गुजरने पर इन्हें जंगली जानवरों का भी डर रहता है। जंगलों से गुजरने पर इन्हें जंगली जानवरों का सामना करना पड़ता है। कहानी "दबी-दबी लहरे" में लेखिका मंगला से पूछती हैः- तुम पहुँचोगी तब तक तो धुप्प

अंधेरा हो जायेगा, जंगल से होकर गुजरेगी कोई भालू या भेड़िया मिल गया तो तुम्हें डर नहीं लगेगा?"[11] कहानी "निर्वासिता" में लेखिका बताती हैः- "माँ रोटी बना रही थी और बच्ची सामने आँगन में खेल रही थी, पीछे झाड़ियों से आया तेंदुआँ और हलके से अँधेरे का फायदा उठा खींच ले गया उसे। गाँव वाले जब तक पीछा किये, आधे से ज्यादा हिस्सा खा चुका था वह बच्ची को। यहाँ के आदिवासियों का कहना है कि जो तेंदुआँ उनकी लड़की को उठा के ले गया था वह बाहर से लाया तेंदुआ था जिसे वन विभाग टूरिज्म बढ़ाने के लिए लाता रहा है। यहाँ के पले-बढ़े जानवर हमें पहचानते है, सदियों से हम साथ-साथ रह रहे है। वे हम पर कभी भी हमला नहीं करते है। हमें देखकर भी साइड से निकल जाते हैं। बहुत ही नारकीय हालतों में रह रहे है ये 56 गाँव के आदिवासी। फिर भी ये यह नहीं चाहते हैं कि बाघ और तेंदुए जैसे हिंसक जानवरों को खुले जंगलों से निकाल उनकी घेराबंदी की जाये।"[12] आदिवासी अपने जीविका के लिए जंगलो पर निर्भर रहते हैं आदिवासी अपने दैनिक जीवन में उपयोग में लाने वाली चीजे जैसे-लकड़ी, साग, महुँआ, जड़ी-बुटी के लिए जंगल पर ही निर्भर रहते है। इन सभी चीजों को इकट्ठा करने के क्रम में कई बार आदिवासी जंगली जानवरों का शिकार हो जाते हैं। "कहानी दबी-दबी लहरे" में मंगला बताती है कि बाजार दूर होने के कारण उन्हें खाने का साधन जुटाने में परेशानी होती है। वह बताती हैः- "बनाली का बाजार दूर पड़ता है इसलिए ढेकी पर मकई को कूट लेते हैं। ढेकी पर ही धान से चावल निकालते है। नहीं दाल के साथ नही, दाल वह भी उरद और कुल्थी की दाल महीने में एकाध बार खाते हैं।"[13] मंगला बताती है कि यहाँ सप्ताह में हाट लगती है। आस-पास के सभी गाँव के लोग दस-दस मील चलकर हाट से सामान खरीदते है। एक ही साथ सप्ताह भर का खाने का सामान खरीदना पड़ता है। वह बताती है कि इस हाट में धान, ज्वारी, सब्जी, हड़िया-ताड़ी, चप्पल, बर्तन, रस्सी, घड़ा, कंघी, साबुन आदि सभी चीजें मिलती है। लेकिन इन चीजों को खरीदने के लिए दस-दस मील दूर पैदल चलकर जाना पड़ता है। इस प्रकार मधु कांकरिया ने आदिवासियों का निवास स्थान जंगलो पहाड़ों में होने के कारण उनके साथ होने वाली समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।

सरकारी उपेक्षाः- कई बार आदिवासियों को सरकारी उपेक्षा से गुजरनी पड़ती है। सरकार वे सभी सुविधा मुहैया नही करा पाते हैं जिनके ये हकदार होते है। सरकार द्वारा दी गई सुविधा आदिवासियों तक पहुँच ही नही पाती है। व्यापारी, विलोचिये, ठेकेदारों, कर्मचारियों द्वारा ही इनकी सुविधाओं का गबन कर लिया जाता है। जिसके कारण आदिवासी सरकारी लाभ नहीं उठा पाते है। मधु कांकरिया की कहानी "दबी-दबी लहरे" में कहानी की पात्र मंगला बताती है कि कैसे उनके दादा-ससुर का कार-बार ठप्प हुआ और सरकार सुविधा देने का वादा कर मुकर गये। वह बताती है कि उनके दादा ससुर लोहे गलाने का काम करने के साथ-साथ लोहा के

सामान का व्यापार करते थे। लेकिन बाजार में टाटा का सामान सस्ता मिलने लग गया था। जिसके कारण लोग उनके दादा-ससुर का लोहा खरीदना बंद कर दिये। और उनका कार-बार ठप हो गया। वह बताती हैः- **"**हमारे दादा ससुर ने सरकार से गुहार भी लगायी कि हमें थोड़ी सुविधा दे दीजिए। हम फिर से जी उठेंगे। ई टाटा-बाटा ने हमारी ज्ञान चुराया है। सरकार ने दिल्ली के विज्ञान-भवन में उन्हें सम्मानित किया लेकिन सुविधा नही दी। गुहार लगाते-लगाते वे चले गये।**"**[14] इस प्रकार कथाकार मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से बताया है कि आदिवासी सरकारी संसाधनों तक पहुँच नहीं पाते तथा वे आश्वाशनों के कारण ठगा महसूस करते हैं।

विस्थापन की समस्याः- विस्थापन का अर्थ है किसी स्थान पर बसे हुए लोगो को कहीं से बलपूर्वक हटाना और वह जगह उनसे खाली करा देना। विकास और आर्थिक लाभ की दौड़ के कारण आदिवासियों को विस्थापन का दर्द झेलना पड़ रहा है। विकास के नाम पर आदिवासियों के पास उपलब्ध जल, जंगल और जमीन छीन ली जा रही है। ज्यों-ज्यों औधोगिक प्रगति हुई, नगरीय विकास हुआ सिंचाई के लिए बड़े-बड़े उद्योगो की स्थापना की जाने लगी। त्यों-त्यों आदिवासियों का विस्थापन की समस्या बढ़ती गई। इस प्रक्रिया में अनेक आदिवासी विस्थापित हुए। विस्थापन के कारण इन्हें असहनीय पीड़ा उठानी पड़ती है। इस प्रकार की प्रक्रिया से उनके मन-मस्तिष्क में घाव पड़ जाता है जो जीवन भर उनको टीस देता है। मधु कांकरिया ने अपने कहानी **"**दबी-दबी लहरे**"** में विस्थापन के इस दर्द को उकेरा है। कहानी में भालू के खेत में घुस जाने पर जंगल कुमार कहते हैः- "चोर भालू नही चोर हम हैं आज जहाँ यह खेत है**,** पहले वह भालू का घर था, तब हम उसे चोर नही दोस्त कहते थे। हमने उससे उसका घर छीन लिया, तो भालू कहाँ जायेगा? जंगल कुमार को खतरा किससे है न अंधेरे से न जानवरों से उन्हें खतरा है उनसे जो हमसे हमारा घर-जंगल छीन रहे हैं लेकिन हम भालू की तरह चुप नहीं रहेंगे। नहीं तो बदली परिस्थिति में हमें भी चोर कहा जायेगा।**"**[15] इस प्रकार मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों में आदिवासियों के विस्थापन को दर्शाया है।

अशिक्षा- आदिवासी समुदाय की एक महत्वपूर्ण समस्या है- अशिक्षा। आदिवासी समुदाय में आज भी अशिक्षा मौजूद है। कुछ आदिवासी युवा पढ़ाई-लिखाई की ओर कदम तो बढ़ाते है। लेकिन पढ़ाई अधूरी छोड़ वे मजदूरी या अन्य काम करने लगते हैं। गरीबी और सुदूरवर्ती होने के कारण इन्हें शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण ये अशिक्षित ही रह जाते हैं। मधु कांकरिया ने आदिवासियों के अशिक्षित होने का चित्रण अपने कहानी **"**दबी-दबी लहरे**"** के माध्यम से किया है। वह बताती हैः- **"**मैंने अभी तक जितने

आदिवासियों से बात की थी उन्होंने दिल्ली तो दूर की बात, अपने गाँव और आस-पास के गाँव और टोलों के अलावा किसी शहर का नाम तक नहीं सुना था, यहाँ तक कि वे भारत तक का नाम नही जानते थे।"[16]

निष्कर्षः- मधु कांकरिया ने अपने कहानियों के माध्यम से आदिवासी जीवन की समस्या का यथार्थवादी चित्रण किया है। उन्होंने आदिवासियों की बेरोजगारी, अंधविश्वास, गरीबी, विस्थापन, शोषण आदि समस्याओं को उजागर किया है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से पाठकों का ध्यान आदिवासी वर्ग की ओर खींचा है। उन्होंने आदिवासियों की दर्द को उकेरा है और उनकी समस्याओं को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है। आदिवासियों की वास्तविक स्थिति, शोषण व संघर्ष को देखने व समझने के लिए इसकी अंतर्वस्तु एवं स्वरूप को उन्होंने हमारे समक्ष रखा है। वह प्रकृति के सहयोगी, सहअस्तित्व का अभ्यस्त**,** ऊँच-नीच**,** छल-कपट से दूर है। आदिवासी वर्ग को हमें समझने की आवश्यकता है। जिससे उनके संघर्षशील जीवन को सरल बनाने में हम कुछ सहयोग प्रदान कर सके।

संदर्भ सूचीः-

1. जल कुम्भी-मधु कांकरिया, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ संख्या-104
2. मधु कांकरिया की यादगार कहानियाँ-मधु कांकरिया, इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड, गौतमबुद्ध नगर (एन०सी०आर०, दिल्ली) प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ संख्या-23
3. जल कुम्भी-मधु कांकरिया, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ संख्या-111
4. मधु कांकरिया की यादगार कहानियाँ-मधु कांकरिया, इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड, गौतमबुद्ध नगर (एन०सी०आर०, दिल्ली) प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ संख्या-22
5. जल कुम्भी-मधु कांकरिया, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ संख्या-103
6. वही, पृष्ठ संख्या-105
7. वही, पृष्ठ संख्या-106
8. मधु कांकरिया की यादगार कहानियाँ-मधु कांकरिया, इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड, गौतमबुद्ध नगर (एन०सी०आर०, दिल्ली) प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ संख्या-15
9. जल कुम्भी-मधु कांकरिया, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ संख्या-107

10. वही, पृष्ठ संख्या-103
11. वही, पृष्ठ संख्या-108
12. वही, पृष्ठ संख्या-114
13. वही, पृष्ठ संख्या-105
14. वही, पृष्ठ संख्या-104
15. वही, पृष्ठ संख्या-108
16. वही, पृष्ठ संख्या-103